चतुर्थ अध्याय

उपसंहार

MAR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

उपसंहार

मेरे लघु-शोध-प्रबंध का विषय है - ` रामचरितमानस के चार संभाषण । `

तुलसीदासजी मध्ययुग के भक्त-कवि हैं । हिंदी साहित्य में गोस्वामी का स्थान सर्वोपरि है । तुलसी ने अपने युग को बहुत निकट से देखा और समझा था । उन्होंने जीवन का मंथन करके मानवता के विकास हेतु जीवन के आदर्शों, मूल्यों, और सत्यों को नवनीत के रूप में खोज निकाला । उनका ` रामचरितमानस ` हिंदी साहित्य का महाकाव्य है । उन्होंने ` मानस ` के द्वारा समकालीन समस्याओं का समुचित समाधान तो प्रस्तुत किया ही, साथ ही लक्ष्योन्मुख मानवता के पथ पर सद्वृत्तियों के संघर्ष के कल्याण-कारी अन्त की योजना उपस्थित की ।

प्रस्तुत प्रबंध के आमुख में विभिन्न धार्मिक साहित्य में आयी रामकथा का परिचय दिया गया है । इसका अध्ययन करनेके उपरान्त एक बात उभर कर सामने आती है वह यह कि विभिन्न धर्मों में रामकथा का निर्माण हुआ है तब भी उनमें मौलिक एकता दिखाई देती है । ` वाल्मीकि रामायण ` ही सम्पूर्ण विभिन्न रामकथाओं का आधार ग्रन्थ बना है । संपूर्ण हिंदी साहित्य के रामकाव्य पर नजर डालने से एक बात प्रमुखता से उभरती है कि रामकाव्य के क्षेत्र में तुलसीदास ही केंद्रीय कवि हैं, जो अपनी प्रतिभा के कारण समूचे युग-जीवन पर छाये रहे ।

प्रस्तुत प्रबंध के प्रथम अध्याय में तुलसी की जीवन एवं साहित्य कृतियों का परिचय दिया गया है । इस अध्याय में मैंने अन्य अनेक उपलब्ध समीक्षा ग्रंथों के सहारे उनकी प्रामाणिक जीवनी प्रस्तुत करने का प्रयास

किया है । वैसे देखा जाय तो तुलसी का जीवन वृत्त अभी तक अन्ध:कारमय है इसलिए जहाँ तक संभव है उनकी प्रामाणिक जीवन की अध्ययन संदोप में प्रस्तुत किया है । उनका सम्पूर्ण साहित्य राम को अभिव्यक्ति दे चुका है । रामकथा से तुलसी के व्याकुल मन को जीवन संघर्ष की प्रेरणा मिली । तुलसी के व्यक्तित्व को देखनेपर, वे एक भक्त, समनव्यवादी, युगदष्टा, मर्यादावादी, समाज-सुधारक, सन्त और भक्त हैं यह लक्षित होता है । उनकी सभी कृतियों को देखने से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि वे एक बहुमुखी काव्य प्रतिभा के कवि थे । वे कोरे कवि नहीं, बल्कि पहले भक्त थे, बाद में कवि ।

द्वितीय अध्याय में तुलसी के उपास्य राम पर विचार किया है । जिस युग में तुलसी जन्मे थे, उस युग में सांस्कृतिक अंध:कार फैला हुआ था । इसी लिए समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करने के हेतु ही उन्होंने राम को उपास्य मानकर अपने विचारों का प्रतिमादन किया है । उनके राम वास्तविक अर्थ में मर्यादा पुरूषोत्तम है और राम जैसी मर्यादा तुलसी को अन्य देवताओं में नही दिखाई दी । उन्हें ऐसा विश्वास था कि राम के ही आदर्शों पर चलकर समाज कल्याण प्रद मार्ग का अवलंब करेगा । अत: तुलसीदासजी ने तत्कालीन परिस्थिति एवं समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही राम को उपास्य माना है । तुलसीदास ने राम का आदर्श प्रस्तुत करके शील, मर्यादा, लोकमंगल और सामंजस्य का माव मानव मन में जागृत किया है ।

तीसरे अध्याय में ` रामचरितमानस के चार संवाद ` को देखने पर यह लक्षित होता है कि भारतीयों के मानस पर रामचरित का अत्यधिक प्रभाव है । इस संदर्भ में तुलसीदासजी के ` रामचरितमानस ` का महत्व अवर्णनीय है । तुलसीदासजी ने मानस के अंतर्गत चार संवादों की योजना करके समाज या जगत की विभिन्न श्रेणीयों के मन में उठनेवाली शंकाओं को मुखरित किया है ।

साहित्य के संदर्भ में तुलसी के राम कहते ही तुलसीदासजी का मानस मन:चक्षु के सामने आता है। ` मानस ` के चार संभाषण - १) याज्ञवल्क्य भरद्वाज २) शिव-पार्वती ३) काकभुशुण्डि-गरूड और ४) तुलसी और संत की योजना करके इन चार वक्ता और श्रोताओं के द्वारा समाज का अज्ञानरूपी अंध:कार दूर करके एक स्वच्छ एवं प्रगतिशील, मर्यादावादी समाज की स्थापना तुलसीदासजी करना चाहते हैं। वास्तव में तुलसीदासजी ने अपने साहित्य की रचना ` स्वान्त:सुखाय` की है, किंतु इसमें सभी समाज का सुख एवं सार्थकता भी अन्तर्निहित है।

१) ` याज्ञवल्क्य-भरद्वाज संभाषण ` में वक्ता याज्ञवल्क्यजी और श्रोता भरद्वाज के संदेह के प्रसंग द्वारा हमें अच्छाइयों और बुराइयों को कर्म पर आधारित बताया है। इसके अंतर्गत स्त्री-पुरूष समानता, स्त्री का पावित्र्य, बहुविवाह का विरोध आदि बातों को हमारे सामने प्रस्तुत किया है और यह बताया है कि अच्छे कर्म का परिणाम अच्छा होता है और बुरे कर्म का परिणाम बुरा होता है। कर्म के लिए भक्ति की आवश्यकता है। इसलिए तुलसीदासजी कहते हैं, कि भक्तिमयी कर्म-साधना से संपूर्ण समाज संगठित होकर प्रेम की शीतल छाया में निवास कर सकता है इसलिए रामभक्ति को सब से श्रेष्ठ बताया गया है।

२) ` शिव-पार्वती संवाद ` में तुलसीदासजी ने ज्ञान को भक्ति के बिना अधूरा कहा है। शंकाशीलता को ज्ञान की पहली सीढी माना है। मानव-मन में उत्पन्न विविध प्रश्नों, शंकाओं के परिष्करण के हेतु शिव-उमा संवाद महत्वपूर्ण है। इसमें ज्ञान का प्रतिपादन हुआ है। शिवजी द्वारा निर्गुण और सगुण में समन्वय दिखाया गया है। तुलसी सगुणवादी होने के कारण उन्होंने सगुण की श्रेष्ठता गायी है। उन्होंने यह भी कहा है कि अज्ञान के कारण भक्तों में अभिमान या दंभ निर्माण होता है तब ज्ञान का महत्व बढ जाता है इसलिए भक्त को भगवान के प्रति लीन रहना चाहिए। जैसे गरूड का अहंकार नष्ट करने के लिए उसे काकभुशुण्डि के पास भेज दिया था।

इस संवाद के द्वारा तुलसीदासजी ने राम के मानवरूप के साथ-साथ परब्रह्मरूप का भी ज्ञान बार-बार वर्णन किया है। इस संवाद के द्वारा जगत् के सभी रिश्तों-नातों के आदर्श भी स्पष्ट किए हैं। उनका मत है कि ज्ञान से युक्त भक्ति का स्वरूप ही मानव-जीवन का श्रेष्ठ मार्ग है। भक्त के लिए यह आवश्यक है कि वह संदेह, मोह तथा भ्रम के निराकरण के लिए ज्ञान मार्ग का अवलंब करे।

३) ' काकभुशुण्डि और गरुड संवाद ' में प्रतिपादित तुलसी की भक्ति, व्यक्तिगत साधना एवं व्यक्ति मात्र के कल्याण के लिए नहीं है, तो वह लोक-कल्याण एवं लोकसाधना के लिए भी है। जिस भक्ति से संसार की रक्षा होती है, जिससे समाज चलता है वही वास्तविक भक्ति है। तुलसी की भक्ति में समस्त सांसारिक मर्यादाओं का आदर्श अंतर्भूत है। उसमें साधु और लोकमत का समन्वय है।

इस संवाद के द्वारा तुलसीदासजी यह कहते हैं कि मानव समाज में सुवृत्तियों और कुवृत्तियाँ चिरजीवी हैं। हर युग में उनका अनुपात बदलता है। सुवृत्तियों का जो देदिप्यमान इस सत्ययुग में था, वह त्रेता में मंद पड गया। द्वापर में और धूमिल हो गया। कलियुग के अविर्भाव के साथ-साथ कुवृत्तियों का अंधःकारमय रूप तीव्रता से बढने लगा नैतिकता का ह्रास हो गया। इन सब बातों की प्रचीति हमें काकभुशुण्डि के वक्तव्य में मिलती है। अन्वयार्थ यह है कि परब्रह्म राम की भक्ति के बिना जीवन में तरणोपाय नहीं।

४) ' तुलसी और संत समागम ' में तुलसी द्वारा वर्णित संत समाज का एक ऐसा आदर्श नागरिक है, जो विषपान करके भी अमृतदान करता है। वह पूर्णतः लोक में प्रवृत्त है, पर घर और वन की साधना का उसमें सामंजस्य हुआ है। परहित उसका सब से बडा धर्म है। अपनी आँच से नहीं,

दूसरों की आंच से द्रवित होने के कारण वह नवनीत से बढकर है। द्वैत भाव से परे होकर वह सच्चे अर्थों में समदर्शी है। अपने इस रूप में वह शोषण, पर-पीडन और पर अपहरण का निषेधक तथा भ्रातृत्व, सहज भक्ति, सुख और शांति का साधक है। संत भाव की पराकाष्टा तुलसी ने राम में दिखाई है। संत का यह आदर्श भारतीय अध्यात्म पर आधारित है।

तुलसी ने चारों संवादों का आयोजन इसप्रकार किया है कि जिससे इनमें संगति निर्माण हो। जिस प्रसंग में शिव के विषय में कुछ कहा गया है, उसके वक्ता याज्ञवल्क्य बनाये गये हैं, जहाँ काकभुशुण्डि के सम्बन्ध में उल्लेख है, वहाँ शिव के द्वारा प्रसंग का वर्णन कराया गया है। कहीं स्वयं कवि ही कुछ कहत देता है। इसीलिए कहीं भी संवादों की अखंडता में बाधा नहीं पहुँची है। ये संवाद पूरे मानस में व्याप्त हैं।

रामचरित को कहने के लिए जो संवाद निर्धारित किए हैं, उनके संबंध में विविध कल्पनाएँ एवं मत दिये गये हैं। इनमें से दो मत प्रमुखत: देखे जा सकते हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार इन्हें चार दार्शनिक सिध्दान्तों - अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुध्दाद्वैत और द्वैताद्वैत का प्रतिपादक कहते हैं। कुछ विद्वान इन्हें ज्ञान, कर्म, उपासना और दीनता ये चार घाट मानते हैं। ये चार घाट चार वर्गों - मुनि, देवता, पक्षी और मनुष्य - का प्रतिनिधित्व करते हैं। तुलसीदासजी ने अंत में इन घाटों से उतर कर रामरूप-जल का आस्वाद लेने को कहा है।

तुलसीदासजी ने `मानस` में अपने काल की परिस्थिति को सामने रखकर वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक रोग के लिए राम-रसायन की एकमात्र दवा प्रस्तुत की है। उन्होंने व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ समाज के सभी स्तरों की चारित्रिक, नैतिक तथा आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रस्तुत किया है।

तुलसीदासजी ने इसप्रकार इन चार संवादों के द्वारा व कर्म, ज्ञान और भक्ति में समन्वय दिखाया हैं। हम यह कह सकते हैं कि तुलसी की भक्ति-सिध्दान्त की धरित्री पर ज्ञान की सरस्वती, कर्म की यमुना और भक्ति की गंगा प्रवाहित होती है। प्रयोगराज पर संगम करनेवाली इन तीनों देव-सरिताओं में सर्वप्रथम स्थान गंगा का है, तदुपरान्त यमुना और अंत में सरस्वती का है। अत: तुलसी की भक्ति-गंगा में, कर्म की यमुना और ज्ञान की सरस्वती मिल कर आगे बहती है और फिर प्रवाहित सरिता गंगा ही कहलाती है। यही स्वरूप तुलसी की भक्ति का है।

प्रस्तुत प्रबंध के आरंभ में कुछ प्रश्न उठ खडे हुए थे, उनके निष्कर्ष निम्न प्रकार निकाले गये है।

१) तुलसीदासजी ने राम को ही उपास्य इसलिए माना है कि - तुलसी की समकालीन परिस्थिति में समाज में हर स्तर का व्यक्ति कर्तव्यच्युत, स्वार्थ केंद्रीत अनैतिक, भ्रष्टाचारी बन गया था और ऐसी परिस्थिति में तुलसी-दासजी को समाज के सामने ऐसे आदर्श की आवश्यकता थी कि निस्वार्थ, कर्तव्यनिष्ठ, उदारमनस्क, शीलवन्त, निर्भय और दैवी गुणों से युक्त व्यक्ति का आदर्श रखना आवश्यक था। इन सभी गुणों से युक्त राम के सिवा और कोई उन्हें नहीं मिला। उन्हें राम पर ही भरोसा है,। क्योंकि उनके राम वास्तविक अर्थ से मर्यादापुरूषोत्तम हैं।

२) एक ही रामकथा को चार संवादों के द्वारा कहने का तुलसीदासजी का यह प्रमुख उद्देश्य है कि, राम के परब्रह्मत्व रूप के बारेमें विविध स्तरों के लोगों के मन में उत्पन्न शंकाओं का निराकरण करना। और साथ-साथ राम-भक्ति का प्रचारकरके दुनिया के कोने-कोने में राम जैसे आदर्श के द्वारा आदर्श समाज की निर्मिती करना। इसलिए तो चार वर्गों की निर्मिती करके उन्होंने देवता से

लेकर पदावली तक में राम भक्ति का प्रचार किया है।

३) तुलसीदासने कर्म, ज्ञान और भक्ति का विश्लेषण हु बहुत ही सुंदर किया है। याज्ञवल्क्य और भरद्वाज संवाद में तुलसीदास कर्म का क्षेत्र संसार को मानते हैं और संसार की सेवा तुलसी के लिए सर्वोच्च कर्म है। परहित धर्म के समान अन्य कोई धर्म नहीं है। इसलिए संतों के द्वारा उन्होंने हमेशा अच्छा कर्म करने के लिए कहा है।

शिव-पार्वती संवाद में उन्होंने पार्वती को जिज्ञासु के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करके ज्ञान का सच्चा अधिकारी जिज्ञासु होता है ऐसा शिवजी द्वारा कहा है। पार्वती की हर शंका का जबाब ज्ञान के द्वारा दिया गया है। परब्रह्म राम की लीला को ज्ञानी ही जान सकता है यह भी उन्होंने बताया है।

काकभुशुण्डि-गरुड संवाद में तुलसीदासजी ने राम भक्ति की महिमा गाई है। तुलसी की भक्ति में भक्त परमात्मा के प्रति श्रध्दा से विनम्र होता है और उसकी विनम्रता उसके जीवन-पथ को संतुलित कर देती है। प्रभु के चिन्तन में आत्मविस्मृत होकर ही भक्त ब्रह्मानन्द का अनुभव कर सकता है। भगवान के प्रति सहज अनुरक्ति और अनन्य प्रेम को ही तुलसी ने भक्ति माना है। इसलिए काकभुशुण्डिजी के कथन में गरुड को सदैव भक्ति की महिमा बतायी गयी है।

इसप्रकार तुलसीदासजी ने इन संवादों के द्वारा यह कहा है कि जीवन की समग्रता के लिए ज्ञान, कर्म, भक्ति इन तीनों की आवश्यकता होती है। ज्ञान बिना भक्ति शुष्क है, एकाकी है। भक्ति बिना कर्म पंगु है।

४) तुलसीदासजी ने चार संवादों की संगति इसप्रकार मिलायी है कि - जिस प्रसंग में शिव के विषय में कुछ कहा गया है, उसके वक्ता याज्ञवल्क्यजी बनाये गये हैं। जहाँ काकभुशुण्डि के सम्बन्ध में कुछ उल्लेख है वहाँ शिव के द्वारा प्रसंग का वर्णन कराया गया है। कहीं स्वयं कवि ही कुछ कह देते हैं। इसप्रकार कहीं भी संवादों की अखंडता में बाधा नहीं आयी है। कर्म, ज्ञान, और भक्ति का समन्वय दिखाकर अंत में तीनों संवादों की संगति के लिए उन्हें भक्ति में मिला दिया गया है।

इसप्रकार यह स्पष्ट है कि तुलसी ने ` मानव ` में चार संवाद रूपी घाटों की योजना की है। वे घाट रामचरितरूपी शीतल, मधुर अमृतमय जल तक पहुँचानेवाले हैं। ये घाट क्रमश: कर्म, ज्ञान और भक्ति तथा रामनाम के हैं। यहाँ उतरकर हमें राम-जल का अमृतानन्द मिलता है।

हमारा जीवन परम धन्य हो जाता है, सफल एवं सार्थक हो जाता है।

परिशिष्ट

१. तुलसीदासजी की रचनाएँ
२. संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट-१

तुलसीदासजी की रचनाएँ

१) रामलला नहछू
२) रामाज्ञा प्रश्न
३) जानकी मंगल
४) रामचरितमानस
५) पार्वतीमंगल
६) गीतावली
७) कृष्ण-गीतावली
८) विनयपत्रिका
९) बरवै रामायण
१०) दोहावली
११) कवितावली
१२) हनुमान-बाहुक
१३) वैराग्य-सन्दीपिनी
१४) सतसई
१५) कुण्डलिया रामायण
१६) अंकावली
१७) बजरंगबाण
१८) बजरंग सढिका
१९) भरत मिलाप
२०) विजय दोहावली
२१) बृहस्पति काण्ड
२२) छन्दावली रामायण

२३) कृष्णय रामायण
२४) धर्मराय की गीता
२५) ध्रुव प्रश्नावली
२६) गीता-भाषा
२७) हनुमान स्तोत्र
२८) हनुमान चालीसा
२९) हनुमान पंचक
३०) ज्ञान दीपिका
३१) राम मुक्तावली
३२) पदबन्ध रामायण
३३) रस भूषण
३४) साखी तुलसीदासजी की
३५) संकट मोचन
३६) सतभक्त उपदेश
३७) सूर्य पुराण
३८) तुलसीदासजी की बानी
३९) उपदेश दोहा

परिशिष्ट-२

संदर्भ ग्रंथ-सूची

१) कवितावली
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर

२) कश्मीरी और हिन्दी रामकथा का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. ओंकार कौल
बाहरी पब्लिकेशन लिमिटेड,
चंदीगढ-दिल्ली, १९७४

३) गोसाईं तुलसीदास
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
वाणी वितान प्रकाशन,
ब्रह्मनाल, वाराणसी-१

४) गीता तत्व दर्शन
ग.वा. क्वीश्वर
तत्वज्ञान प्राध्यापक कॉलेज,
होळकर इंदूर

५) तुलसी व्यक्ति और रचना संदर्भ
डॉ. भगवती प्रसाद सिंह
राजकमल प्रकाशन,
दिल्ली, सं. १९७५

६) तुलसी और मानवता
डॉ. सूर्य नारायण मट्ट
ऊर्जा प्रकाशन, इलाहाबाद
द्वीतीय संस्करण, १९८७

७) तुलसी साहित्य में नीति मक्ति और दर्शन
डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा
संजीव प्रकाशन, कुरुक्षेत्र

८) तुलसीदास और उनका सुन्दरकान्ड
श्री निवास शर्मा
सूर्य प्रकाशन, नई सड़क,
दिल्ली, १९८८

९) तुलसी और उनका काव्य
रामनरेश त्रिपाठी
राजपाल एण्ड सन्स, कश्मिरी गेट,
दिल्ली-६, १९५१

१०) तुलसी रसायन
डॉ. भगीरथ मिश्र
साहित्य भवन, इलाहाबाद २११ ००३
एकादश सं. १९८५

११) तुलसी काव्य में नये-पुराने संदर्भ
डॉ. रामबाबू शर्मा
वाणी प्रकाशन, दिल्ली ११० ००७

१२) तुलसी दर्शन
बलदेव प्रसाद मिश्र
हिंदी साहित्य सम्मेलन
प्रयोग २००३ संवत

१३) तुलसी का मानस
डॉ. मुंशीराम शर्मा
ग्रंथम, रामबाग, कानपुर प्रथम सं. १९७२

१४) तुलसीदास
डॉ. माता प्रसाद गुप्त
हिंदी साहित्य प्रेस
प्रयाग द्वितीय सं. १९४६

१५) तुलसीदास जीवनी और विचारधारा
डॉ. राजाराम रस्तोगी
अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर,
कानपुर

१६) तुलसी काव्य में धर्म और आचरण का स्वरूप
डॉ. चरण सखी शर्मा
प्रवीण प्रकाशन, महरौली
नई दिल्ली १९८४

१७) तुलसी काव्य चिन्तन
डॉ. अम्बा प्रसाद सुमन
ग्रंथायन स्वोदय नगर सासनी गेट
अलीगढ २०२००१
प्रथम १९८२

१८) दोहावली
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर

१९) महाकवि तुलसीदास युगसंदर्भ
डॉ. भगीरथ मिश्र
साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड
इलाहाबाद प्रथम संस्करण १९०० सं.

२०) मानस मंथन
डॉ. स्वामीनाथ शर्मा
आशुतोष प्रकाशन, चेतगंज,
वाराणसी-१

२१) मानस मर्मक
शिवलाल पाठक
खड्गविलास प्रेस
बाँकीपुर, १९२०

२२) मूल गोसाईं चरित
बाबा वेणीमाधवदास
कल्याण प्रेस, गोरखपुर

२३) रामचरितमानस
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर

२४) रामचरितमानस का साहित्यिक मूल्यांकन
डॉ. सुधाकर पाण्डेय
राधाकृष्ण प्रकाशन

२५) रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन
डॉ. राजकुमार पाण्डेय

२६) रामकथा (उत्पत्ति और विकास)
डॉ. फादर कामिल बुल्के
हिंदुस्तानी एकेडमि,
इलाहाबाद, प्रथम १९७७

२७) रामचरितमानस की भूमिका
डॉ. रामदास गौंड
हिन्दी पुस्तकमाला काशी संवत १९७०

२८) विनय पत्रिका
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर

२९) वैराग्य संदीपनी
हनुमान प्रसाद पोद्दार
गीता प्रेस, गोरखपुर

३०) वाल्मीकि रामायण

गीता प्रेस, गोरखपुर २००९ संवत

३१) हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि
डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
संवत १९७९

३२) हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ
डॉ. शिवकुमार शर्मा

३३) हिंदी साहित्य
हजारी प्रसाद द्विवेदी
अत्तर चन्द कपूर एण्ड सन्स,
दिल्ली प्रथम १९५२

३४) हिंदी साहित्य का अलोचनात्मक इतिहास
डॉ. रामकुमार वर्मा
नेशनल प्रेस, इलाहाबाद
द्वितीय १९३८

३५) हिंदी साहित्य का इतिहास
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
नागरी प्रचारिणी सभा,
पाँचवा सस्करण २००६ संवत

३६) हिंदी साहित्य की भूमिका
हजारी प्रसाद द्विवेदी
राजकमल प्रकाशन,
पटना, द्वितीय १९६९

अन्य सहायक ग्रंथ सूची

१) तुलसी
उदयभान सिंह
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

२) तुलसी दर्शन मिमांसा
डॉ. उदयभान सिंह
लखनऊ विश्व विद्यालय,
लखनऊ २०१८ संवत

३) तुलसी साहित्य
(विवेचन और मूल्यांकन)
आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, वचनदेव कुमार
नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, नयी दिल्ली ११० ००३
संस्करण १९८१

४) तुलसी का शिक्षा दर्शन
डॉ. शम्भुलाल शर्मा
आशुतोष पुस्तकायन, फलोदी
राजस्थान, प्रथम १९६२

५) तुलसी की जीवन भूमि
चन्द्रबलि पाण्डेय
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
प्रथम २०११

६) भक्ति का विकास
डॉ. मुंशीराम शर्मा
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

७) मानस एक अनुशीलन
शंभु नारायण चौबे
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी,
प्रथम सं. १९०० सं.

८) मानस रहस्य
जयराम दीन
गीता प्रेस, गोरखपुर
प्रथम ३२५० संवत १९१९

९) मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद
डॉ.कपिलदेव पाण्डेय
चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी,
वि.संवत २०२० प्रथम

कोश

१) बृहत हिंदी पर्यायवादी शब्द कोश
गोविन्द चातक
लक्ष्मीशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम १९८५

२) भारतीय मिथक कोश
डॉ. उषापुरी विद्यावाचस्पति
नेशनल पब्लिसिंग हाऊस २३ दरिया गंज,
नयी दिल्ली ११० ००२ प्रथम १९८६ संवत

३) हिन्दी-साहित्य कोश (भाग-२)
धीरेंद्र वर्मा
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, प्रथम संवत २०२०

पत्रिका

१) ` सरस्वती `
प्रेमनारायण टंडन
१९६९